तेरी चौखट से श्री राधे मुझे कही और ना जाना है

तेरी चौखट से श्री राधे,
मुझे कही और ना जाना है,
यही जीना यही मरना,
यही अंतिम ठिकाना है,
तेरी चौखट से श्री राधे,
मुझे कही और ना जाना है...

फिजाये बंदगी तेरी,
मुझे यहाँ खींच लायी है,
और...
आ गया रास है मुझको,
धाम तेरा बरसाना है,
तेरी चौखट से श्री राधे,
मुझे कही और ना जाना है...

मुझे निज सेवा में रखलो,
यही बस आरझु मेरी,
ज़िंदगी भर लाडली जु,
अब तो तुमको रिझाना है,
तेरी चौखट से श्री राधे,
मुझे कही और ना जाना है...

तेरे दर से किशोरी जु,
'मधुप' ने सब कुछ पाया है,
तेरी इन मेहरबानियों का,
हमेशा ही शुकराना है,
तेरी चौखट से श्री राधे,
मुझे कही और ना जाना है...

कवि : सुप्रसिद्ध लेखक एवं संकीर्तनाचार्य श्री केवल कृष्ण 'मधुप' (मधुप हरि जी महाराज) अमृतसर (9814668946)
स्वर : सर्व मोहन (टीनू सिंह)

https://www.bhajanganga.com/bhajan/lyrics/id/29243/title/teri-chaukhat-se-shree-radhe-mujhe-kahin-aur-na-jana-hai

अपने Android मोबाइल पर BhajanGanga App डाउनलोड करें और भजनों का आनंद ले |